ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 6, Issue 23, July-September, 2019
Page Nos. 40-43

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा एवं शांति शिक्षा सम्बन्धी विचार

❐ डॉ0 अमिता जैन*

शोध सारांश

वर्तमान समय भौतिकवादी युग है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा के कारण लोग अपने मानवीय मूल्यों को भूलते जा रहे हैं। जिसके कारण चारों तरफ अशांति व हाहाकार मचा हुआ हैं। लोग अहिंसा को भूलकर हिंसा के साधानों को अपना रहे हैं। शिक्षा संबंधी आदर्शों के बारे में ग्रंथ पर ग्रंथ लिखे गए हैं, परन्तु हम पहले से भी कहीं अधिक भ्रमित हैं। यही कारण है कि दिन–प्रतिदिन चारित्रिक पतन, नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। इस समय में ऐसी लौ की जरूरत है जो अंधकार में प्रकाशित मार्ग प्रदान कर सके। आज के युग में अपराध, आतंक, अपहरण तथा आत्महत्या आदि से मानवीय मूल्यों के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लग गया है। भ्रष्टचार की गंगा में पूरा देश स्नान कर लाभ कमा रहा है। हमारी स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता में बदल गयी है। अनेक शिक्षा शास्त्रियों ने तथा आचार्य महाप्रज्ञ ने भी शिक्षा का उद्देश्य अहिंसा व शांति के मार्ग पर चलकर मनुष्यों में नैतिक मूल्यों का विकास व चारित्रिक उत्थान बताया है। अहिंसा और शांति जैसे मूल्यों पर उनका चिंतन सिर्फ तक सीमित नहीं है, अपितु उनका चिंतन सारी मानवता को लेकर है।

Keywords : अणुव्रत आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, नैतिक शिक्षा, अहिंसा एवं शांति

प्रस्तावना – वर्तमान शिक्षा पद्धति में बौद्धिक विकास पर अत्यधिक बल दिया गया है। आज के महाविद्यालय और विश्वविद्यालय से अच्छे प्राध्यापक, वैज्ञानिक, विधिवेत्ता, प्रशासक, शिक्षाशास्त्री, व्यवसायी निकल रहे हैं। किन्तु उच्चकोटि का नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं निकल रहा है। हमारा बायां मस्तिष्क बहुत सक्रिय हो गया है। मस्तिष्क का दायां पटल निष्क्रिय हो रहा है। इस असंतुलन ने पूरे व्यक्तित्व को असंतुलित बना दिया है। यह असंतुलित व्यक्ति हिंसा के लिए जिम्मेदार है। हमारी शिक्षा पद्धति में बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन बने, तब हिंसा की समस्या को सुलझाने में हमें सुविधा होगी। हिंसा के कारण व्यक्ति का मन अशांत रहता है। अशांति का सबसे बड़ा कारण है वाणी का असंयम। यदि हमारा वाणी पर संयम नहीं है, मन पर संयम नहीं है और असीम महत्त्वाकांक्षा है, तब हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है – नए मानव की आचार संहिता अहिंसा की आचार संहिता है। अहिंसा की आचार संहिता अणुव्रत की आचार संहिता है। इस प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव निर्माण का आधार अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान को बताया। साहित्य में जीवन विज्ञान को शारीरिक और बौद्धिक विकास के साथ–साथ मानसिक व भावनात्मक विकास माना है। आज शिक्षा में इन चारों पक्षों के विकास की आवश्यकता है। वर्तमान में देशभर के कई विद्यालयों एवं कॉलेजों में जीवन विज्ञान के प्रयोग किए जा रहे है। इन प्रयोगों से बालकों में नैतिकता, अनुशासन तथा सहनशीलता के विकास की सम्भावनाएं बढ़ गयी है। यदि इन सभी पर पूर्णरूपेरण ध्यान दिया जाए तो वर्तमान शिक्षा आशातीत स्तर तक पहुंच सकती है। जिस युग में हम जी रहे हैं, वहां आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा व शांति संबंधी विचारों की प्रासंगिकता में वर्तमान युगीन वैश्विक समस्याओं को लेकर किया गया चिंतन और भी ज्यादा प्रासंगिक है। आज जरूरत है ऐसी शिक्षा प्रणाली की जिससे धूमिल होती हुई नैतिकता को एक बार पुनः जागृत किया जा सके। क्योंकि जिस भारत ने अतीत में कभी आध्यात्मिक और नैतिक क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व किया था। आज आवश्यक है कि राष्ट्र के नैतिक धरातल और चारित्रिक स्तर को उठाया जाए किन्तु जब तक राष्ट्र की जनता के जीवन–व्यवहार में शुद्धि नहीं आयेगी, तब तक अनैतिकता, चारित्रिक पतन, अनुशासनहीनता जैसी निकृष्ट वृत्तियां नहीं मिटेंगी तब तक राष्ट्र चरित्र के उत्थान की बात सोचना तक निरर्थक है। जैसा कि अणुव्रत गीत में कहा भी गया है –

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दिए गए तीनों विचारों अणुव्रत आन्दोलन, जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान को इस प्रकार समझा जा सकता हैं –

➢ अणुव्रत आन्दोलन :

अनैतिकता, असंयम और अनाचरण के झंझावत से

*सहायक आचार्या – शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं–341306 (राजस्थान)

डगमगाते लोक–जीवन के लिए अणुव्रत आंदोलन नैतिकता, संयम, सदाचार और सच्चरित्रता पर टिके रहने की एक अभिनव प्रेरणा है। अणुव्रत आन्दोलन का घोष है – संयमः खलु जीवनम् संयम ही जीवन है।

➢ प्रेक्षाध्यान :

प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा प्रवर्तित अध्यात्मिक वैज्ञानिक पद्धति है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शब्दों में प्रेक्षाध्यान समग्र व्यक्तित्व विकास का प्रायोगिक दर्शन है।

➢ जीवन विज्ञान :

आचार्य महाप्रज्ञ ने विद्यार्थी वर्ग में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए जीवन–विज्ञान की प्रविधि को निरन्तर बनाये रखा। अध्यात्म व विज्ञान के सम्मिलित रूप से जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ ने मूल्यपरक व प्रयोगात्मक आधारों पर शिक्षा जगत को अभिनव अवधारणा प्रदान की है। उनकी इस अनमोल देन को स्वयं में साक्षात कर जहाँ एक ओर शिक्षा जगत् को अर्थवान बनाया जा सकता है वहीं दूसरी ओर एक सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण कर राष्ट्र को ऊँचाइयों के शिखर तक पहुंचाया जा सकता है।

• आचार्य महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व :

नाम और रूप से जुड़ा जो व्यक्तित्व है, वह बाह्य व्यक्तित्व है। दृश्य व्यक्तित्व की व्याख्या नाम और रूप को छोड़कर नहीं की जा सकती। अतीत के मुनि नथमल, युवाचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान में आचार्य महाप्रज्ञ इन तीनों रूपों में निष्पन्न व्यक्तित्व है महाप्रज्ञ। महाप्रज्ञ जी अणुव्रत, जीवन आगम अन्वेषण आदि के अनमोल रत्न सदी को बांट रहे हैं। भारतीय मनीषा के इस श्लाका पुरूष के चिन्तन का दायरा व्यापक है। दूरदर्शी सोच में मानव जाति के कायाकल्प का ख्वाब है। महाप्रज्ञ जी का शरीर कृश है, मोटा नहीं है। इसका रहस्य सूत्र है – महाप्रज्ञ की योग साधना। जब महाप्रज्ञ युवाचार्य बने, अनेक लोगों ने कहा – "युवाचार्यश्री, सामान्य आदमी को थोड़ा सा सम्मान मिलता है तो हर्ष उसके भीतर नहीं समाता। उसका शरीर भी उस सम्मान से प्रभावित होता है। जब व्यक्ति ऊँचे ओहदे पर चढ़ता है। तब उसका शरीर भी बढ़ने लग जाता है। आपको युवाचार्य बनाया गया। तेरापंथ के इस सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद भी आपका शरीर वैसा ही दुबला–पतला बना हुआ है। यह आश्चर्य की बात है। इसका कारण क्या है ? महाप्रज्ञ ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा कि – मैं पहले योगी बना फिर युवाचार्य इसलिए मेरे शरीर पर कोई असर नहीं आया। यदि मुझे योगी बनने से पहले युवाचार्य बनाया जाता तो संभव है मेरा शरीर प्रभावित हो जाता।"

➢ अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयकर्ता :

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता स्वामी विवेकानन्द ने महसूस की। विनोबा भावे ने कहा – विज्ञान की रेलगाड़ी में अध्यात्म का इंजन हो। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर इस कार्य को संभव कर दिखाया। उन्होंने अध्यात्म और विज्ञान को एक–दूसरे के पूरक के रुप मे प्रतिष्ठित किया। महाप्रज्ञ के शब्दों में – विज्ञान ने धर्म का नाश नहीं किया, बल्कि उसे पुनर्जीवन प्रदान किया है। उनका प्रेक्षाध्यान अध्यात्म + विज्ञान का समन्वय। वैज्ञानिक परीक्षणों से इनके आशा जनक परिणाम सामने आए हैं।

➢ अनुत्तर योगी :

आचार्य महाप्रज्ञ का नाम विश्व क्षितिज पर चमक रहा है। क्योंकि वे क्रान्तदृष्टा आचार्य हैं। महान योगी हैं। जैन–योग की परम्परा के पुनरूद्धारक हैं। युवाचार्य बनने पर किसी ने पूछा आप में परिवर्तन क्यों नहीं आया। संघ के सम्राट–अनुशास्ता होने के बावजूद मोटापा रईसी क्यों नहीं आयी। सधे हुए शब्दों के अनुत्तर योगी महाप्रज्ञ ने जवाब दिया गुरुदेव तुलसी ने मुझे पहले योगी बनाया और फिर युवाचार्य–आचार्य।

➢ प्रज्ञा का अजस्त्र स्त्रोत :

जिनकी प्रज्ञा गंगोत्री का न माप है, न मापदण्ड। पुष्करावर्त मेघ की भांति जिनकी प्रज्ञा ने अन्तर्दृष्टि के प्रयोग दिए हैं, जो जैन दर्शन और जैन आगमों के मर्मज्ञ हैं। वेद उपनिषद् साहित्य के ज्ञाता हैं। बौद्ध चिन्तन में निष्णात् हैं। प्राचीन–अर्वाचीन भारतीय विद्या शाखाओं के गम्भीर अध्येता हैं। पुराण पिटक, गीता, गुरु ग्रन्थ साहब, बाईबिल को प्रस्तुति देने में जो सिद्धस्त हैं। चाहे महावीर हो या राम, कृष्ण, ईसा। चाहे भिक्षु हो या गांधी, विनोबा। सुकरात हो या अरस्तु। डार्विन हो या आइंस्टीन। मार्क्स हो या लेनिन। फ्रायड हो या युंग। उनके मौलिक चिन्तन से कोई पहलू धर्म–दर्शन, न्याय विज्ञान या नैतिकता का अछूता नहीं रहा। यही वजह है कि महाप्रज्ञ के समर्थकों में उन लोगों की संख्या ज्यादा है, जो उन्हें चेहरे से कम, विचारों से अधिक जानते हैं।

➢ अहिंसा–अनेकान्त के प्रणेता :

अहिंसा की व्यापक परिभाषा करते हुए महाप्रज्ञ महावीर का आभास कराते हैं। जब अनेकान्त का विश्लेषण करते हैं तो जैनाचार्य समन्तभद्र, हरिभद्र, मल्लिषेण की तरह प्रतीत होते हैं। उनके शब्दों में अहिंसा और अनेकान्त दो नहीं, अहिंसा का प्रायोगात्मक रुप ही अनेकान्त है। अहिंसा को राष्ट्रनीति बनाकर ही समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

➢ विभिन्न विचारकों की दृष्टि में महाप्रज्ञ :

❖ गणाधिपति गुरुदेव तुलसी कहते हैं– ''मैं महाप्रज्ञ को पाकर गौरवान्वित हूं। आज इनके भीतर से जो उर्जा निकल रही है, उससे हजार गुना अधिक निकलेगी और वह विश्व के लिए बहुत हितकारी बनेगी।''

❖ राष्ट्रकवि दिनकर के शब्दों में– ''हम विवेकानन्द के समय में नहीं थे। हमने उनको नहीं देखा, उनके विषय में पढ़ा मात्र है। आचार्य महाप्रज्ञ आज के विवेकानन्द हैं। आपको

पाकर हम गौरवान्वित हैं।"

❖ प्रसिद्ध उपन्यासकार विमलमित्र, जिनकी पारगामी मेधा से प्रभावित होकर कहते हैं– ''यदि महाप्रज्ञ के साहित्य को कुछ वर्ष पूर्व पढ़ने का सौभाग्य मिलता तो मेरे उपन्यास की धारा और दिशा दूसरी होती।''

❖ डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति–प्राप्त विद्वान के अनुसार ''आचार्य महाप्रज्ञ जैन परम्परा के अद्वितीय शलाका पुरुष हैं और समग्र भारतीय मनीषा और चिन्तन के प्रामाणिक व्याख्याता हैं। वे करुणार्द्र सन्त हैं, विश्वबंधु हैं, दृष्टा हैं, युगपुरुष हैं, उनका रचना–संसार अध्यात्म के आलोक से उद्भाषित हैं, मानवीय मूल्यों से सम्प्रेरित और समलंकृत हैं।"

➢ डॉ. कलाम का ऐतिहासिक वार्तालाप :

14 फरवरी, 2003 को महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किए। समस्त प्रोटोकोल को दर किनार कर सीधे महाप्रज्ञ के चरणों में आए। मीडिया के लोगों ने पूछा आपको यहां क्या मिला? राष्ट्रपति ने एक ही शब्द में उत्तर दिया–

"Enlight enment and New energy"

''मुझे महाप्रज्ञ से मिलकर नया प्रकाश, नयी उर्जा और नयी दृष्टि मिली है।'' 15 फरवरी को महाप्रज्ञ सभागार में 'शिक्षा में नैतिक मूल्य' विषय सेमीनार का उद्घाटन किया। लगातार दो दिन तक राष्ट्रपति का महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आना मुम्बई में चर्चा का विषय बन गया। प्रतिष्ठित समाचार पत्रों ने अध्यात्म और विज्ञान का शिखर सम्मेलन नाम से समाचार प्रकाशित किए। ''स्वस्थ एवं उन्नत भारत का निर्माण'' पुस्तक जिसमें राष्ट्रपति कलाम एवं आचार्य महाप्रज्ञ का संयुक्त लेखन है। भारतीय गणतंत्र में यह पहली घटना है कि एक राष्ट्राध्यक्ष और एक धर्म गुरु ने एक साथ ग्रंथ लिखा है।

➢ यू.जी.सी. द्वारा प्राकृत पंडित का दर्जा :

22 फरवरी, 1989 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महाप्रज्ञ को प्राकृत के परम्परागत पंडित के रूप में स्वीकार किया। महाप्रज्ञ को किसी भी कोण से देखें, पढ़ें, सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश मिलेगा।

➢ आचार्य महाप्रज्ञ का अहिंसा चिन्तन :

अहिंसा के सिद्धान्त और प्रयोग के प्रतिष्ठा के सन्दर्भ में सामान्यतः यह धारणा बनी है कि गांधीजी की मृत्यु के साथ ही अहिंसा का विकास अवरूद्ध हो गया है। किन्तु विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अहिंसा शास्त्रियों की इस शृंखला की कड़ी में आचार्य महाप्रज्ञ जिन्होंने अहिंसा के पुरातन सिद्धान्त की वर्तमान के संदर्भ में आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, शरीरशास्त्रीय, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक आदि व्याख्याएं की। हिंसा की उत्पत्ति के आन्तरिक एवं बाह्य कारणों तथा इससे उत्पन्न कार्यों की विवेचना का अनुसंधान के आधार पर अहिंसक व्यक्तित्व निर्माण हेतु अहिंसा प्रशिक्षण की अभिनव प्रयोग पद्धति का आविष्कार कर स्वस्थ्य समाज संरचना का एक आधार प्रस्तुत किया।

● वर्तमान में प्रासंगिकता :

नैतिक पतन, चारित्रिक पतन, आचरणहीनता, अशांति, अहिंसा आदि शिक्षा के क्षेत्र की गम्भीर समस्या बनती जा रही है। यदि समय रहते इन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो शिक्षा का पतन किस तरह होगा कुछ कहा नहीं जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं कि नई पीढ़ी का निर्माण, इस संकल्पना में पुरानी पीढ़ी के बीच अवस्थाकृत भेदरेखा नहीं है। उन दोनों के बीच एक गुणात्मक भेदरेखा है। वर्तमान पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी से जो विरासत में मिला है, उसमें वांछनीय और अवांछनीय दोनों प्रकार के तत्त्व हैं। उनमें से अवांछनीय तत्त्वों का परिष्कार करना बहुत जरूरी है। क्योंकि इन अवांछनीय तत्त्वों ने समाज को रूग्ण बनाया है। स्वस्थ समाज संरचना की चर्चा बहुत प्रिय है। उसे संभव बनाने के लिए आवश्यक है नए मनुष्य का जन्म और नई पीढ़ी का निर्माण।

● उपसंहार :

जीवन निर्माण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है शिक्षा। हमारे यहां यह मान्यता रही है कि जब–जब मानवता के अस्तित्व पर कोई संकट गहराता है तब–तब युग की कोख से ऐसे महापुरूष का जन्म होता है जो तत्कालीन दिग्भ्रमित मानवता को नवीन मार्ग प्रशस्त करता है। आचार्य महाप्रज्ञ का युग यही युग है जिसमें हम जी रहे हैं लेकिन उनकी प्रासंगिकता और उनके जीवन मूल्यों की अपरिहार्यता इस संक्रमणकालीन दौर में तब और ज्यादा महत्त्व रखती है, जब सबसे बड़ा दायित्व उस पीढ़ी को जीवन मूल्यों की शिक्षा देना जो पीढ़ी भावी भारत की कर्णधार है। अर्थात् विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक और व्यावहारिक शिक्षा के साथ–साथ मानव मूल्यों की शिक्षा और संस्कारों से दीक्षित करना। आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा और शांति जीवन मूल्यों को अगर देश विदेश की शिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो निश्चित रूप से यह एक क्रांतिकारी कदम होगा मानवता की दिशा में, जैसा स्वयं आचार्य महाप्रज्ञ चाहते थे। आचार्य महाप्रज्ञ के शांति व अहिंसा जीवन मूल्यों से वर्तमान पीढ़ी को दीक्षित कर देते हैं तो यह एक युगान्तकारी कदम होगा। जो निश्चित रूप से सारी मानव सभ्यता के हित में ही निहित होगा।

सन्दर्भ :–

1. आचार्य, महाप्रज्ञ 2000 ''अध्यात्म का प्रथम सोपान'' ''सामायिक'', आदर्श साहित्य संघ, चूरू (राज.) पृष्ठ संख्या–15
2. आचार्य, महाप्रज्ञ 2000. ''लोकतन्त्र : नया व्यक्ति नया समाज'', जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राज.) पृष्ठ

संख्या– 25
3. आचार्य, महाप्रज्ञ 2000. ''कैसे सौचे'', जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राज.) पृष्ठ संख्या– 47
4. आचार्य, महाप्रज्ञ 2001. ''अमूर्त चिन्तन'', लाडनूं, नागौर (राज.) पृष्ठ संख्या–56
5. साध्वी, परमयशा 2006 प्रथम संस्करण ''आचार्य महाप्रज्ञ का नैतिक दर्शन'' जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राज.) पृष्ठ संख्या–80

❐❐❐